वन उत्पादकता संस्थान

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

प्रकृति कार्यक्रम

जवाहर नवोदय विद्यालय, लोहरदगा

दिनांक 26.07.2022

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून एवं जवाहर नवोदय विद्यालय संगठन नोएडा के संयुक्त प्रयास से युवाओं एवं किशोरों में प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता के उद्देश्य से वन उत्पादकता संस्थान द्वारा संस्थान के निदेशक डा० नितिन कुलकर्णी के तत्पर पहल पर श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की भारतीय वन सेवा के नेतृत्व में श्री एस० एन० वैद्य, श्री निसार आलाम एवं श्री बी० डी० पंड़ित के एक दल द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव वर्ष में दिनांक 26 .07.2022 को जवाहर नवोदय विद्यलय लोहरदगा में वर्ग 7 एवं 8 के लगभग 150 छात्र छात्राओं विद्यालय के शिक्षकों के लिए प्राचार्य श्रीमती सुमन सुरीन की उपस्थिति में ''प्रकृति कार्यक्रम'' के अन्तर्गत एक पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

श्री पी० के० सिंह के संचालन में उत्साहित छात्र–छात्राओं को सम्बोधित करते हुए संस्थान के श्री बी० डी० पंड़ित तकनीकी अधिकारी ने प्रकृति, धरती एवं पर्यावरण को मानव की आवश्यकताओं से जोड़ते हुए बताया कि पर्यावरण संरक्षण आज आवश्यक कार्यों में से एक है। विकास की निरन्तरता को बनाये रखते हुए पर्यावरण को सुरक्षित रखकर ही मानव सुरक्षित रह सकता है। पर्यावरण प्रदूषण यथा वायु प्रदुषण, मृदा प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण को समझाते हुए आग्रह किया कि छोटी–छोटी लालच को त्याग कर हम स्वस्थ एवं सुरक्षित जीवन जी सकते हैं। इसके लिए आज से ही पौधा लगाने एवं प्लाष्टिक खास कर एकल उपयोग के प्लाष्टिक का त्याग करने का आग्रह किया।

श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की ने संरक्षित वनों के प्रकार को विस्तार से समझाते हुए राष्ट्रीय उद्यान, सेंचुरी अभ्यारण्य, समुदायिक संरक्षित वन एवं संरक्षित वन के महत्व को समझाते हुए उसके द्वारा वन एवं वन्य जीवों की सुरक्षा का विस्तार से वर्णन किया। खाद्य श्रृंखला को समझाते हुए उन्होंने कहा कि छोटे–से–छोटे जीवों और बड़े से बड़े जीवों को एक दूसरे पर आश्रित रहना पड़ता हैं और इस श्रृंखला को बनाये रखने के लिए जंगल की आवश्यकता होती है। जंगल को बचाने का प्रयास कर मानव खुद को सुरक्षित करने का प्रयास करता है। उन्होंने विलूप्त प्रायः चिड़ियाँ डोडो का उदाहरण दिया कि उसके विलुप्त होने से कई वृक्ष प्रजाति विलुप्त हो गए। आइंस्टीन की बात दोहराते हुए समझाया कि मधुमक्खियों के खत्म होने से खाद्य संकट उत्पन्न हो जायेगा और मानव का अस्तित्व मिट जायेगा। वनोत्पाद की चर्चा करते हुए बताया कि मानव जीवन की लगभग आधी आवश्यकताएँ वनोत्पाद से पूरी की जाती है। श्रीमती तिर्की ने अधिकतर छात्र–छात्राओं से सवाल–जवाब करते हुए इस जागरूकता को काफी प्रभावी बनाया। मिष्टी कुमारी, शुभम, शिवम आदि दर्जनों छात्र–छात्राओं ने चर्चा में भाग लिया एवं अपने उत्साह को प्रदर्शित किया। श्रीमती तिर्की के जागरूकता कार्यक्रम को श्री पी० के० सिंह ने सराहना की। श्री एस० एन० वैद्य ने भी पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण से बचाव के उपाय बताए एवं विद्यार्थियों के धर्यपूर्ण भाग लेने के लिए धन्यवाद दिया।

इसके पूर्व विद्यालय के प्राचार्य श्रीमती सुमन सुरीन ने संस्थान के सदस्यों का स्वागत करते हुए छात्र–छात्राओं से वानिकी पर्यावरण प्रदूषण, प्लाष्टिक उपयोग आदि से संबंधित संक्षिप्त सम्बोधन में बच्चों से आज के कार्यक्रम से लाभ लेने की अपील की।

श्री पी० के० सिंह अंग्रेजी शिक्षक ने धन्यवाद ज्ञापन किया एवं विद्यार्थियों को वन उत्पादकता संस्थान भ्रमण कराने की इच्छा जाहिर की साथ ही साथ वन उत्पादकता संस्थान से पुनः इस तरह के कार्यक्रम करने का आग्रह किया।

कार्यक्रम के आखिर में छात्र–छात्राओं शिक्षकों एवं संस्थान के सदस्यों द्वारा 50 विभिन्न फलदार एवं इमारती पौधों का रोपण किया गया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में संस्थान के श्रमती अंजना सुचिता तिर्की श्री एस० एन० वैद्य श्री निसार आलम एवं श्री बी० डी० पंड़ित ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची